DPN 5685

Title : १. काक परिक्षा विधि KĀKA PARIKṢĀ VIDHI
2. महागणपति पूजा विधान MAHĀ GAṆAPATI PUJĀ VIDHĀNA

Run. No. 6376 Cat. No. Micro. No.

Subject शकुन or विधि
sakuna and ritual
Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 19 × 7.8 Folios 8 Lines (in a page) 8/9

Compl. / Incompl. Chapt. / act /

Author / translator विष्णुधर आचार्य Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 833, 830 Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. / Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

श्रीश्रीश्रीमहाध्वयाक्कायगमलक्ष्मनमानमः॥
स्यानामिगाताङ्गनवयगुता॥ नामिनामसधूम
थनस्य यात्रामिमूयूनमहेनमयाकस्य नथायिनी
तानयिनीययामि॥ थत विसूवनावार्यनवाकाम

२विपि थम ॥ सामदृष्टि क्षुस्मंगनवुधसिउ साधुस वरानू गुणञ्चो ॥ थ आदि जं
कवगनिष्ठाव ॥ धमादिनयाकानहोना ॥ १ ॥ नानीया ॥ नविषदृष्टम सामञ्चो ॥ थ
दृष्टि मंगव वृधसाधि यिसमवगुरु गुरु धाविउ आदिजकवगनिष्ठव ॥ धम
ना ॥ नीयाकानहोना ॥ २ ॥ छ्ठ नाहानगुंथि यंना गृहस्थि नविधुधनाया
यनेनायायानगया ॥ ॥ धुरि मस्तु ॥ सं ८७३ चैत्र शुद्धि ॥ १२ ॥ गु ॥

२ विन्दुउ

श्री वानु ॥ लिनाः ॥ छउ सन्या ॥ जिनउवर्ष नाम तु वैश मबुंदो श्र गुद्धि नयाद
क ॥ तिथीनवम्या ॥ तिथि दिन ॥ गोक्कि युक्त नं लिलयं वनीदं विष्णुधनाम
नाम ४ ॥ ॥ सं ८७३ चैत्र मासगुक्ल नवम्या ॥ सामदिने लिखित मिदं पूस्तकं
संपूर्णं विष्णुधनाम नाम नेलवलया ७ ॥

ॐ नमः श्रीगुरुवे नमः ॥ स्वनगोलड वार ॥ काकबलि खवन्हामि ३ गुरागुरा अविघ
घ्नु ॥ ॐ नमो काकाकाचण्डालि स्वाहा ॥ ॐ नमः श्वस्त्र विश्वरूपाय स्वाहा ॥ ॐ नमः श्म
नि ग्रक्षलि स्वाहा ॥ बलि स्वं थाय दशकान उथ्व मक्ल थपुजेया ॥ थायस्वान: काद्र
स्वान: हाकास्वान: थ्वसिस्वानन बलिसछ्या ॥ थायस्वान छ्या बलि कान सा जय
हिन्व ॥ ॥ काद्र न छ्याया कान सा: सेप्रमठ्यु ॥ ॥ हाकु न छ्याया कान सा ख्या
जयमरिं ॥ ० ॥ सिंह: संह्वदि ग्रधरा ३ थ्वन दयकेगा सखा याव: बलि सछ्या
यख्याया नस स्वनोंज ॥ सिंहबलिन छ्यायाका न सा जयवाग ॥ ॥ हंस नि बलि
न सिद्धि वा जो ॥ ॥ ग्रध्रबलिन हंगवा गा ॥ ० ॥ थाग थ्यापि याख्य: ॥ श्याकेन: मा
स: हन्माल ॥ हन्मयन छ्या बलि कान सा: मतन ॥ ॥ श्याखन ज्ञि बलि ॥ ॥

मा सया चिनया गि ॥ ❀ ॥ नगसव वाक ॥ यद्वित नदि: हस्ती ३ थ्वन त छ्याया ब
लि स्वय ॥ यद्वित बलिन सिद्धि: नदि बलिन महाज्ञाधि: हस्ती बलिन कलह ॥ ❀ ॥
॥ स्वयान बलि सं ३ श्रीखण्ड: नकोचन्दन हन्मान ॥ श्रीखण्ड छ्याया कानसा: सेय
नि लक्ष्मी हृया युष: नकोचन्दन याथाग हाय हन्मान या महाकस्ट मृत्यु ॥ ❀ ॥
थाय काय निमिहिन स्वय ॥ ॥ थागन ज्ञा कासन उपथ्यमक्ल थाप बलि वृक्ष व ३
व उयाल वृक्ष ३ थउ याद वृक्ष व ३ थाय छ्या वउ: काद्र हाका: थायि बलि हिंव
काद्र सफ हाय: हाकू मरु माम ॥ ❀ ॥ थाय बन याख्य ॥ ज्ञान्वउ ३ हिन छ्या:
याय नसा हिंव: थान छ्याय नसा मल्वम ॥ हिंवनन छ्याया न स मव
न ॥ ० ॥ गुरु वि नियासाय: ज्ञान्वउ ३ गुरागुरा ॥ थान छ्याया काय: हवि

दिन ख्वाया प्वाय हिन्वमन मरपू॥ ० ॥जयवाजय स्वय जागवउ उमिकनजय
हस्कीन संधीपू हे: गा:ध्वा पनाजयहपू॥ ०॥वाजायाहिंग्वमाहिग्वस्वय॥
जागवउ उपवेन संधि॥ हस्कि सस्य विनास हयू:नधि संभमहय॥ ०॥
किसि यास्वय जागवउ उमिथ्याचानख्वायायनसा महिंग्व॥ कोन ख्वाया सहा
पहिंग्व॥ दिन ख्वय इहि रव महिंग्व॥ ० ॥वागमयूमगमयूस्वय॥ जागवउ उले
खन ख्वाया वागमयूम चानख्वा यायनसा पाकूकपा गमयू॥ हिन्वमन ख्वाया
मगमयू वतनकूनउ गमयू॥ ०॥ विपाहाया स्वय जागवउ ३ मा कुग सारा:प्पा
नजुह: निंव मगव ४॥ ॥ इति वाकव्रनिस्वाविधि॥ ७ ॥ लक्ष्मीवनस्याहत॥

श्रीगुरुभ्यो नमः॥ अथ श्रीमहागणपति पूजाविधानं लिख्यते॥ ॐ सूर्यादि सूर्याघं ... ॥ अद्य...
साकाशेति॥ गुरुनमस्कारं कुर्यात्॥ गुरु भ्यो॥ नमः॥ ...श्रीं गणपतये॥ ... पादि वा मकर्मुद्रे
मध्ये नमस्कृत्वा॥ ॐ आ ... किकमलासनाय ॥ आसनं॥ ...अ ... हराय रुद्र॥ पृथ्वी कमा ध्राय ...
... श्रीं ... कवचाय हुं॥ पृथ्वी कमिन सिनि धाय॥ ... ॥ ... लिह ला ... से ॥ विनायक ...
षयनमः॥ मितसि॥ ... छन्दसे॥ मूख ... श्रीमहागणपति देवताय॥ ... हृदि॥ ...
जाय ॥ गुह्ये॥ ... पादे॥ स्वाहा कीलकाय॥ ... चतुर्विध पूजार्थ ... विनियोगः
न्यास विन्यास ... ॥ नमः ... ॐ ... स्वाहा ॥ श्री ... नी ... सा हा॥ ... माया
वषट्॥ ... नामिका ... हूं॥ ... कनी ... वौषट्॥ ... फट्
॥ ॥ ... दिन्यस ॥ ध्यानं॥ ... साकाम ... वन्द॥ ... गन ... वना ...
ससगक्ति पूनस्म ... मानसा पवचा ... सपूजितं॥ ... मा ... न्यासं कुर्यात्॥ ॥ ... श्री

ॐ त्रिपुरन मा थाग्री ॐ वा स्वां २४॥ स लाक॥ ॐ ड्रीं ग्री ॐ विधि मा ड्रीं ॐ वा स्वां २४॥ भूस्व वृस्व॥ ३ ॐ वि
नायक नाथ पू स्वान्वा स्वां २॥ दक्ष जेर॥ ३ ॐ गि वाल मा गी लेख वा स्वां २॥ वाभे॥ ३ ॐ विधि वृत्त स्वन्वा
स्वां २॥ दक्ष णक॥ ॐ विधि वृत्त स्वासां वा स्वां २॥ वाभे॥ ३ ॐ कपिल वा स्वां वा स्वां २ द कनो मो यू
ट॥ ३ ॐ गन न नोय कम धा न्वा स्वां २ वाभे॥ ३ ॐ एकदन्त नमा न्वा स्वां २ दक्षिणक हस्त॥ ३ ॐ द्वि
कका मि न्यम्वा स्वां २ वा म॥ ३ ॐ गजवक्त्र माहि न्यम्वा स्वां॥ ॐ [illegible]॥ ॐ नि न ग [illegible] न्वा स्वा॥
स्वां २ [illegible]॥ ३ ॐ एकपाद पादव न्यम्वा स्वां २ ॐ दक्षिण पक्ष॥ ३ ॐ दीर्घमूख वालि न्यम्वा स्वां २
ऊर्ध्व॥ ३ ॐ शंखवर्ण नन्दिन्यम्वा स्वां २ व्र [illegible]॥ ३ ॐ ४ वृ [illegible] धज न्यम्वा स्वां २॥ मूख॥ ३ ॐ क
गधनाथ कामरूपि न्यम्वा स्वां २ दक्ष पाव स्थो॥ ३ ॐ [illegible] गुरुनाम्वा स्वां २ क हृदि॥ ३ ॐ सूर्यक [illegible]
जाव ल न्वा स्वां २ मधि व [illegible]॥ ३ ॐ शिलावन मनस न्वा स्वां २ ॐ [illegible] लिसं [illegible]॥ ३ ॐ लवाय नमस्य न्वा स्वां
२ कनो [illegible]॥ ३ ॐ [illegible] विकाम दा वा स्वां २ वाम कनसंधो॥ ३ ॐ [illegible] भाद भा दान्वा स्वां २ कपू

दि॥ ३ ॐ एकपाद नमान्वा स्वां २ मणिमध्ये॥ ३ ॐ द्विजिह्व महिसन्वा स्वां २॥ ॐ अंगुलिसंधी॥ ३ ॐ धार्म्मूख लो
तिका न्वा स्वां २॥ वा नाल्ये॥ ३ ॐ सूम स्व गीता न्वा स्वां २ दक्ष पाद मूल॥ ३ ॐ आभाद कासि ह्व न्वा स्वां २ आभो॥
३ ॐ एकपाद नमा न्वा स्वां २ ॐ [illegible]॥ ३ ॐ द्विजिह्व महि [illegible] वा स्वां २ वा दे अंगुलिसंधी॥ ३ ॐ सून द्वि [illegible] न्वा स्वां २
अंगुल्य [illegible]॥ ३ ॐ वीरविक [illegible] न्वा स्वां २ वाम पाद मूल॥ ३ ॐ [illegible] ल [illegible] न्वा स्वां २ आभो॥ ३ ॐ द व
न दे दीर्घ [illegible] न्वा स्वां २ [illegible]॥ ३ ॐ वामदेव [illegible] नोन्वा स्वां २ वा दा अंगुलिसंधी॥ ३ ॐ न व [illegible]
[illegible] धानि न्यन्वा स्वां २ [illegible]॥ ३ ॐ द्वि [illegible] वान मा [illegible] न्वा स्वां २ दक्ष पा [illegible]॥ ३ ॐ स नो नी वी मा स्वां
न्वा स्वां २ वाम॥ ३ ॐ [illegible] गगी न्य न्वा स्वां २ पृष्ठ॥ ३ ॐ मल माला [illegible] वा स्वां २ नाभो॥ ३ ॐ द्विम [illegible]
व ला न्वा स्वां २ ॐ दय॥ ३ ॐ [illegible] नदीका न्वा स्वां २ हृदि॥ ३ ॐ [illegible] लम्बूस्व [illegible] न्वा स्वां २ [illegible]
मूल॥ ३ ॐ [illegible] न्वा स्वां २ वाम [illegible]॥ ३ ॐ [illegible] गनि या न्वा स्वां २ दक्ष पादि [illegible]॥ ३ ॐ
व [illegible] न्वा स्वां २ हृ दा दि वा [illegible]॥ ३ ॐ [illegible] तान तानि न्यवा स्वां २ हृ दा दि द [illegible] पो।

विन्दुतिमैं उगाऊनु समर्थ वेभ्भय कोंमिग ८ल्या तिथ्यौं गविदिन लिसखतीकंदिन नाविकु
धनामकुमु॥ सं ८३० वैशाख वनुक्रय उचदमीशुक्रदिनसंघर्षुतालिखितं मसा
[illegible]

श्री नल्लोमयार्द्दिनि॥

श्रीसि सिरैकाकवलि॥ श्रीमात
सि [illegible]
पर्वतनाली लेउमा: निपे

15
10
5
0 CMTS. 5 10 15

कैं॥ ३सं ग्रकौ॥ यशो भि न्य म्बार्यां २ हृदादि वाम॥३॥ गणेश गुरु म्बार्यां २ हृदादि पादाः कैं॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गणनायक वालसिद्धि कान्बार्यां नमः ४॥ हृदादि मूद्धिपर्यन्तं॥ ॐ ति गणनाम मात
का न्यासः ४॥ ॥ मूलेन न्यस्तं वक्ष्ये ध्यानपदं न्यस ग॥ ॥ ततो त्रिकोणवक्त्रा दावूत्य चतुरस्रं मलिख्य ग
भूमिमण्डुल दलक लौ लसन आधारायनमः ४॥ सं पूज्य॥ अपुत्र पात्र कोल्यः मूलेन पूपितं वन्दनादि
।से।ति पाः अध्यात्म सर्कोच्च पूज्य॥ ॐ ह्रीं सूर्य मण्डुलाय द्वादशकलात्मने अर्घ्य पात्राय नमः ४॥ द्धुनया
त पूर्व मूलेन॥ सोम मण्डुलाय षोडश कलात्मने अमृताय २॥ तद्यदवि यन्त्र वा ह्री विन्य
सं॥ शक्ति वीज नामृती कृत्वा मूलेन त्रिधा सं पूज्य षड् अङ्गः॥ जूवाङ्कुर धेनु गन्ध पुष्प मूद्राः
दर्शन ज्ञलेना त्मानं पूजा पदकं ध्यात्वा नादं यूकं॥ मूलेन नाम पूजा विधाय॥ ॥मालिनी प
१०७॥ ॥पीठ पूजा॥ ते आधारादिया ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपति वल्लभाम्बा सनाय २॥ ॥ॐ
सर्वविघ्नाधियोल सर्वसिद्धिप्रद सर्वविघ्न प्रशमनीय व अहित गर्व न सर्वश्च व रखादाय मेष

र ह्रीं हूं गं नमः स्वाहा॥ ॐ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपति वल्लभाम्बा शक्ति सहिताय भूमिमण्डुल सानिध्यं
कु पूर २४॥ ॐ त्यो वा प्र। ध्या नी॥ वीजापूर गद पृकार्मुक चक्रा ज नीलोत्पल वीज न्य विषाद
नेत्र कलसस्थाय कनागानूरो॥ ध्यायावल्लभया सपद्म करया श्लिष्टो ज्वलद्भूषया। विश्वत्य सिद्धिना
मर्स स्थितकवा विघ्नाविनिद्धार्थद ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गणपति वल्लभा मूर्तये ध्यानं पूर्ववत् २॥
॥ ॐ वै [illegible] आगच्छ। ॐ इह तिष्ठ २॥ ॐ इह सन्निधेहि २॥ ॐ इह सन्निरुध्यस्व॥ मम पूजा गृहाण॥ गे
मुद्रा दर्शय॥ मूलेन गणपति वल्लभाम्बा शक्ति सहिताय नमः पाद्यं नमः २॥३॥ मूलेन पाद्यं ग
न्धे नाय वल्लभा सहिताय २॥ ॐ वं अर्घ स्वाहा॥ आचमनीयं वं॥ स्नानं २॥ ॥ वस्त्र [illegible] पूर्ववत्॥ भू
गन्ध॥ सिंदुर॥ यज्ञोपवीत॥ [illegible] पुष्पानि धूप दीप [illegible] लि ३॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपत
ये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं
मे वशमानय सर्वविघ्नान्नाशय २ हूं फट् स्वाहा॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं [illegible] गं गीं गूं गैं गौं गः

श्रीं श्री नमः श्रियाय उमा दायणी गक्ति सहिताय अपूर्वपूर्वा पूज॥ गणपतायपादपूजा॥ हं हल
श्रीयपादू॥ विं विघ्नाजायपापू॥ लं लक्ष्मी दत्तायपादू॥ विं विघ्नश्वनायपादपूज॥ नं नकीदको
यपादू॥ हं हलिमूर्त्तीयपादू॥ हं हत्वेमूर्त्तायपादूज॥ ॐ ह्मौं लक्ष्मीदलीयमूर्मनाक्षि वाक्षवी
गक्ति साहितायपादूज॥ ह्मौं महादयामूर्मनानुथकवीदवी गक्ति सहितायपादपू॥ ह्मौं चिंमक्का
यमूर्मनसाधकीदवीनक्ति सहितायपादपू॥ ह्मौं धूमायें ह्रायमूर्मननायकीदवी गक्ति सहिता
यपादपू॥ ह्मौं नागमूर्त्तायमूर्मनसीतिकावीदवीगक्ति सहितायपादपू॥ ह्मौं उवादकायमूर्म
नासनादवी गक्ति सहितायपादू॥ ह्मौं यवगुहस्तायमूर्मनविद्धिवादीदवी गक्ति सगायपा
पू॥ ह्मौं विघ्नायमूर्मन सिद्धिकवीदवी गक्ति सहितायपादपूज॥ ह्मौं गणपतायमूर्मनु
सिद्धिकात्रीदवी गक्ति साहितायपादपू॥ गणमूर्तदिगयुक्ता॥ महदयादिनपूजनं॥ मूर्
थावत्वनपूजा॥ लं मूर्त्तायशा॥ नं मूर्नथा॥ मं यमोया॥ कं मंसत्याया॥ वं वरूणाय॥ यं वायूया॥ कं

कुवराय॥ हं ईशानाय॥ वं ब्रह्मणे॥ विं विष्णवे नमः॥ पूर्वादिमनाकं वत्वत्र॥ ॥नैवि
त्वाकिनायादायनमः॥ पूर्ववसाऽदल॥ ॐ वामाये २॥ श्रीनमञ्जनायर॥ विल्ववाम
दक्षिणया॥ सं वक्रतुण्डायादायनमः॥ पूर्वसादक्षिणदल॥ ॐ निजाये २॥ श्रीवृ
षाक्षायनमः॥ वृक्ष वामदक्षिणया॥ ॐ पिप्पलपादायनमः॥ दवमध्यकृदल॥
ॐ वक्षे नमः॥ श्री मदनायनमः॥ पिप्पलवामदक्षिणया॥ ॐ पिप्पलादायनमः॥ पूर्वस्य
वामदल॥ ॐ वरुणायनमः॥ श्रीमाधव नमः॥ प्रियमुवामदक्षिणया॥ ईशानदल॥
॥गत अष्टकोणे॥ श्री लक्ष्मी नमः॥ श्री प्रीत्यै नमः॥ श्रीमनोरवायनमः॥ श्रीमनोवमायनमः॥
श्रीं मनादिनाविले नमः॥ श्रीमनोमनमः॥ ॥त्रिकोणे॥ ॐ मदियपादा नमः॥ पूर्व॥ श्री
मकें नमः॥ वाम॥ श्रीं वनायनमः॥ दक्ष॥ ॥दक्षिमूजादगीय॥ वलिं दया॥ ॐ श्री

ह्रिं क्रूं २ हूं २ खुगुनणधिपतायमयमांसधूपदीपनैवेद्यवलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ॐ मैनाह

धर्वायेः॥ मो पुष्प धूप दीप यथा पनी तं पूजा वलिं गृह्न २ अमुकस्य सर्व शान्तिं कुरु २ ॐ हूं २

मूलं २ लं शं वं स्वाहा हीं २ ह्रूं २ महागणपतायें क्रमस्य ववदाममम स्वाहा॥ ॐ नमोनी मूं ल्लौं ग्लुं ग्लौं

महागणपतायवलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ गसहस्थानमें॥ गणपति स्थावलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ॥

ॐ त्रुदि॥ दं उकादि॥ त्रुसिना॥ आदि॥ खेक्राघ्मदि॥ जयादि॥ वूजा वत्तुदि॥ समवलि ॥

॥ ॥ वन्दुं न्दनसिन्धनपुष्पधूपदीपनैवेद्यादि कं मूलनदत्वा॥ मूलनपुष्पाउ लि पूर्व

वलि धर्मनाथ॥ ॥ मूलनपुष्पा ३ लि अर्घदत्वा॥ प्रथमं कि ३ यं कुर्यात् मूलन॥

यज्ञाति पुष्कातिजयंसमयंत॥ ॥ मङ्गलस्मार्ग॥

नमः श्री हन सिद्धाय॥ ध्यान॥ ॐ धवलांग हस्तानून

ॐ श्री रक्त वाणेश नमः॥ कैलासशिखरासीनं देवदेवं महेश्वरं॥ प्रणाम्य नारदः प्राह नीलकण्ठं

त्रिलोचनं॥ नारद उवाच॥ भगवन् सर्वदेवेश॥ ... नंदिकेश्वर उवाच॥ देवदेव ...

मूलनक्षत्र॥ देवताया